RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

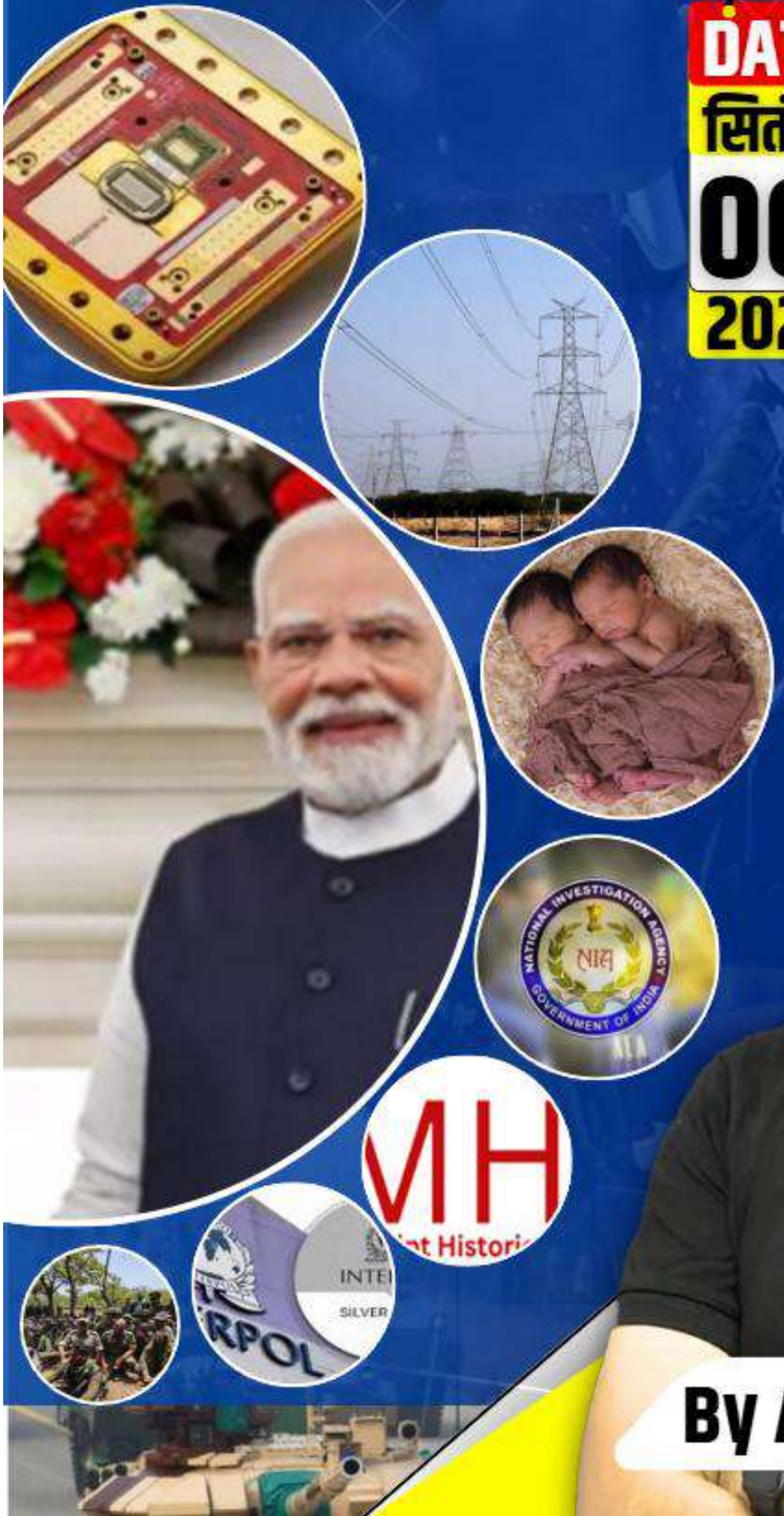

DATE
सितंबर
06
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

मेजोराना कण / Majorana particles

संदर्भ:

वैज्ञानिक **मेजोराना कणों** को स्थिर क्वांटम कंप्यूटर बनाने की नींव मानकर उस पर शोध कर रहे हैं। सामान्य कणों से अलग, मेजोराना कणों में ऐसी विशिष्ट क्वांटम विशेषताएँ होती हैं जो क्वांटम तकनीक की सबसे बड़ी चुनौती—**क्यूबिट डिकोहेरेंस** का समाधान कर सकती हैं। हाल ही में **संघनित पदार्थ भौतिकी** के प्रयोगों में, खासकर **सुपरकंडक्टिंग नैनोवायर्स** में किए गए परीक्षणों से ऐसे संकेत मिले हैं जो **मेजोराना मोड्स** की उपस्थिति से मेल खाते हैं। इन खोजों ने उम्मीद जगाई है कि यह अद्भुत अवस्थाएँ भविष्य में अधिक स्थिर और भरोसेमंद क्वांटम कंप्यूटिंग का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं।

मेजोराना कण:

1. **परिभाषा:** मेजोराना कण (या मेजोराना फर्मियन) ऐसे **फर्मियन होते हैं जो स्वयं अपने ही एंटीपार्टिकल होते हैं**।
   - यानी, इलेक्ट्रॉन का एंटीपार्टिकल **पॉज़िट्रॉन** अलग होता है, लेकिन मेजोराना कण में ऐसा नहीं है- यह खुद ही अपना एंटीपार्टिकल है।
2. **संकल्पना की उत्पत्ति:** इसका विचार 1937 में इतालवी भौतिक विज्ञानी **एत्तोरे मेजोराना** ने दिया था।
3. **उदाहरण और संभावनाएँ:**
   - **न्यूट्रिनो** एक संभावित मेजोराना कण हो सकता है, हालांकि यह अभी सिद्ध नहीं हुआ है।
   - **संघनित पदार्थ भौतिकी** में मेजोराना कण **क्वाज़ीपार्टिकल्स** के रूप में विशेष पदार्थों में देखे जा सकते हैं।
4. **महत्व:**
   - **भौतिकी में:** यह समझाने में मदद कर सकते हैं कि ब्रह्मांड में **पदार्थ** ज्यादा क्यों है और **एंटीमैटर** कम क्यों।
   - **क्वांटम कंप्यूटिंग में:** मेजोराना क्वाज़ीपार्टिकल्स से टोपोलॉजिकल क्वांटम कंप्यूटर बनाए जा सकते हैं, जो अधिक स्थिर और शोर-प्रतिरोधी होंगे।

मेजोराना कणों की विशेषताएँ:

1. **स्वयं का प्रतिबिंब (Self-mirror nature)**
   - मेजोराना कण स्वयं ही अपने एंटीपार्टिकल होते हैं।
   - जैसे इलेक्ट्रॉन और पॉज़िट्रॉन अलग होते हैं, वैसे यहाँ कोई भेद नहीं होता।
2. **स्व-विनाश नहीं करते:** अगर दो मेजोराना कण मिलें तो वे एक-दूसरे को नष्ट (annihilate) नहीं करते, जबकि सामान्य कण-एंटीपार्टिकल जोड़े ऐसा करते हैं।
3. **विद्युत आवेश रहित:** इन पर कोई इलेक्ट्रिक चार्ज नहीं होता इसी वजह से इन्हें सीधे-सीधे पहचानना मुश्किल है।
4. **विशेष पदार्थों में प्रकट होना:** प्रयोगशालाओं में ये स्वतंत्र रूप से नहीं दिखते, ये केवल सुपरकंडक्टर जैसे विशेष पदार्थों में बहुत कम तापमान पर क्वाज़ीपार्टिकल्स के रूप में प्रकट होते हैं।
5. **जोड़े में आना (Come in pairs)**
   - ये आमतौर पर दो हिस्सों में मौजूद होते हैं।
   - दोनों मिलकर एक क्वांटम अवस्था (Quantum State) बनाते हैं, लेकिन उनके हिस्से दूर-दूर रहते हैं, जिससे स्वाभाविक **Error Resistance** मिलता है।
6. **अनोखा क्वांटम व्यवहार:** ये **Non-Abelian Anyons** नामक दुर्लभ श्रेणी में आते हैं।
   - जब इन्हें "ब्रेइड" (braid/आपस में अदला-बदली) किया जाता है तो पूरे क्वांटम सिस्टम की अवस्था अनोखे और पूर्वानुमेय तरीके से बदल जाती है।
7. **पकड़ में मुश्किल (Hard to pin down)**
   - इनके मौजूद होने के संकेत अक्सर अन्य प्रभावों से भी पैदा हो सकते हैं।
   - इसलिए वैज्ञानिक इनकी खोज की पुष्टि करने में बहुत सतर्क रहते हैं।

मेजोराना कणों के उपयोग:

1. **क्यूबिट्स को स्थिर बनाना:**
   - मेजोराना कणों में **Non-local encoding** की क्षमता होती है।
   - यह क्वांटम कंप्यूटर में *Decoherence* (सूचना खोने की समस्या) के खिलाफ पहली सुरक्षा देता है।
2. **टोपोलॉजिकल कंप्यूटेशन**
   - इनसे **Logical Operations** (तार्किक क्रियाएँ) "Braiding" तकनीक से की जा सकती हैं।
   - यह प्रक्रिया क्वांटम सिस्टम की टोपोलॉजी (Topology) पर आधारित होने के कारण अत्यधिक मज़बूत होती है।
3. **दक्षता में वृद्धि (Efficiency Gains)**
   - मेजोराना आधारित तरीका हार्डवेयर स्तर पर ही क्यूबिट्स की सुरक्षा करता है।
   - इससे भारी-भरकम **Quantum Error Correction** की ज़रूरत कम हो जाती है।

रेगुलेटरी एसेट्स / Regulatory Assets

संदर्भ:

हाल ही में **सुप्रीम कोर्ट** ने निर्देश दिया है कि **राज्य विद्युत विनियामक आयोग (SERCs)** और **वितरण कंपनियाँ (DISCOMs)** अपनी जमा हुई **रेगुलेटरी एसेट्स (Regulatory Assets)** को एक निश्चित समयसीमा के भीतर निपटाएँ।

रेगुलेटरी एसेट्स (Regulatory Assets):

परिभाषा

- रेगुलेटरी एसेट्स बिजली वितरण कंपनियों (DISCOMs) के **राजस्व घाटे** को दर्शाते हैं।
- यह घाटा तब होता है जब **Average Cost of Supply (ACS)** यानी बिजली सप्लाई करने की वास्तविक लागत, **Annual Revenue Requirement (ARR)** यानी उपभोक्ताओं से वसूली गई दर और राज्य सरकार की सब्सिडी से ज़्यादा हो जाता है।

मुख्य शब्दावली

- **Average Cost of Supply (ACS):** डिस्कॉम द्वारा एक यूनिट बिजली उपलब्ध कराने की वास्तविक लागत।
- **Annual Revenue Requirement (ARR):** उपभोक्ता टैरिफ + राज्य सरकार की सब्सिडी से प्राप्त राजस्व।

कैसे बनते हैं रेगुलेटरी एसेट्स?

- यदि ACS > ARR, तो हर यूनिट पर DISCOM को घाटा होता है।
- उपभोक्ताओं पर अचानक बिजली दर (Tariff) बढ़ाने का दबाव न पड़े, इसलिए नियामक संस्थाएँ इस घाटे को स्थगित लागत मानकर भविष्य में वसूलने की अनुमति देती हैं।
- इस Deferred Cost को ही **Regulatory Asset** कहा जाता है, जिसे बाद में ब्याज सहित रिकवर किया जा सकता है।

उदाहरण

- यदि **ACS = ₹7.20 प्रति यूनिट** और **ARR = ₹7.00 प्रति यूनिट** है, प्रति यूनिट घाटा = ₹0.20।
- यदि कुल 10 अरब (10 Billion) यूनिट बिजली दी गई → घाटा = ₹2,000 करोड़।
- इस घाटे को तुरंत वसूलने के बजाय रेगुलेटरी एसेट्स के रूप में दर्ज किया जाएगा।

एसीएस–एआरआर (ACS–ARR) अंतर के कारण:

1. **दबाए हुए टैरिफ:** सामाजिक या चुनावी कारणों से बिजली की कीमतें वास्तविक लागत से कम रखी जाती हैं।
2. **सरकारी सब्सिडी में देरी:** किसानों या कमजोर वर्गों को दी जाने वाली सब्सिडी समय पर जारी नहीं होती।
3. **इनपुट लागत में उतार-चढ़ाव:** कोयले और ईंधन की कीमतों में अस्थिरता से उत्पादन लागत बढ़ जाती है।
4. **तकनीकी और वाणिज्यिक हानियां:** बिजली चोरी, गलत बिलिंग और ट्रांसमिशन की अक्षमताओं से राजस्व घाटा बढ़ता है।

नियामक परिसंपत्तियों (Regulatory Assets) के प्रभाव

उपभोक्ताओं पर (For Consumers):

1. **अल्पकालिक लाभ (Short-term Benefit):** उपभोक्ताओं को शुरू में स्थिर टैरिफ का फायदा मिलता है।
2. **दीर्घकालिक बोझ (Long-term Burden):** भविष्य में स्थगित वसूली के कारण अचानक अधिक टैरिफ वृद्धि करनी पड़ती है, जिसमें ब्याज भी जुड़ जाता है।

डिस्कॉम्स पर (For DISCOMs):

1. **नकदी प्रवाह की समस्या (Cash-flow Problems):** नियामक परिसंपत्तियों के बढ़ने से डिस्कॉम्स को बिजली उत्पादकों को भुगतान करने में कठिनाई होती है।
2. **वित्तीय दबाव (Financial Stress):** भुगतान के लिए अधिक उधारी लेनी पड़ती है, जिससे वित्तीय बोझ बढ़ता है।
3. **निवेश में बाधा (Hindrance to Investment):** तरलता की कमी से बुनियादी ढांचे, नवीकरणीय ऊर्जा और ग्रिड आधुनिकीकरण में निवेश प्रभावित होता है।

वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएँ:

Regulated Asset Base (RAB) मॉडल

- इस मॉडल में यूटिलिटी कंपनियों को टैरिफ के जरिए अपने निवेश की रिकवरी और सुनिश्चित रिटर्न की अनुमति मिलती है।
- इससे लंबी अवधि के लिए **राजस्व की स्थिरता** बनी रहती है।

UK का RIIO Framework: *(Revenue = Incentives + Innovation + Outputs)*

- राजस्व को **प्रदर्शन लक्ष्यों** (जैसे विश्वसनीयता, सेवा गुणवत्ता और कार्बन उत्सर्जन में कमी) से जोड़ा जाता है।
- इसका उद्देश्य **कुशलता और नवाचार** को बढ़ावा देना है।

Digital Infrastructure (डिजिटल अवसंरचना)

- **स्मार्ट ग्रिड** और **India Energy Stack** जैसे सिस्टम, संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता और **efficiency-based recovery** को मजबूत कर सकते हैं।

भारत-सिंगापुर 2025 शिखर सम्मेलन / India–Singapore 2025 Summit

संदर्भ:

प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** ने नई दिल्ली में सिंगापुर के प्रधानमंत्री **लॉरेंस वोंग** के साथ व्यापक और सार्थक वार्ता की।

सम्मेलन के प्रमुख परिणाम:

समुद्री सुरक्षा और मलक्का जलडमरूमध्य गश्त:

- भारत ने मलक्का जलडमरूमध्य की गश्त में रुचि व्यक्त की, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला रणनीतिक मार्ग है।
- पनडुब्बी बचाव अभियानों में सहयोग और इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI) के समर्थन पर सहमति।

रक्षा और उभरती प्रौद्योगिकियाँ:

- क्वांटम कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ऑटोमेशन और मानव रहित पोतों जैसी तकनीकों पर संयुक्त अनुसंधान और सहयोग।

आर्थिक और बुनियादी ढांचा सहयोग:

- भारत से सिंगापुर को समर्पित बंदरगाहों के माध्यम से ग्रीन एनर्जी निर्यात करने का समझौता।
- अंतरिक्ष अनुसंधान और उसके अनुप्रयोगों में सहयोग को बढ़ावा।
- सेमीकंडक्टर पर भारत–सिंगापुर नीति संवाद की स्थापना।

स्किलिंग और एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग: चेन्नई में *नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर स्किलिंग इन एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग* स्थापित करने का समझौता।

आतंकवाद विरोधी और सुरक्षा सहयोग:

- दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्तरों पर सहयोग को दोहराया।
- वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (FATF) में साझेदारी के तहत सीमा-पार आतंकवाद से निपटने पर जोर।

मलक्का जलडमरूमध्य क्या है?

मलक्का और सिंगापुर जलडमरूमध्य (SOMS) वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण और रणनीतिक मार्ग हैं। लगभग विश्व के आधे समुद्री व्यापार और एशिया के 70% तेल आयात इन जलमार्गों से होकर गुजरते हैं।

इनकी महत्वता के कारण, जलडमरूमध्य की सुरक्षा केवल किसी एक देश की क्षमता में संभव नहीं है। इसे सुरक्षित रखने के लिए तटीय देशों, उपयोगकर्ता देशों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच संयुक्त प्रयास और सहयोग की आवश्यकता होती है, ताकि सभी वैध उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

मलक्का जलडमरूमध्य गश्त क्या है?

मलक्का स्ट्रेट्स पेट्रोल (MSP) एक समन्वित और व्यावहारिक सुरक्षा पहल है, जिसे **इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड** ने मलक्का और सिंगापुर जलडमरूमध्य (SOMS) की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लागू किया है।

इसमें तीन मुख्य घटक शामिल हैं:

1. **Malacca Straits Sea Patrol (MSSP)** – समुद्री गश्त द्वारा जलमार्ग की निगरानी।
2. **"Eyes-in-the-Sky" (EiS) Combined Maritime Air Patrols** – हवाई गश्त के जरिए सुरक्षा बढ़ाना।
3. **Intelligence Exchange Group (IEG)** – खुफिया जानकारी का साझा करना और सहयोग।

मलक्का जलडमरूमध्य का रणनीतिक महत्व:

1. **वैश्विक व्यापार मार्ग:** लगभग 40% भारत का व्यापार और चीन के 80% तेल आयात इसी जलमार्ग से गुजरते हैं।
2. **ऊर्जा सुरक्षा:** मध्य पूर्व से पूर्वी एशिया तक तेल और गैस का निर्बाध प्रवाह सुनिश्चित करता है।
3. **भू-रणनीतिक लाभ:** भारत का अंडमान और निकोबार कमांड इस रणनीतिक गटक पाइंट के निकट होने के कारण इंडो-पैसिफिक समुद्री सुरक्षा में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।

भारत-सिंगापुर संबंधों के बारे में-

ऐतिहासिक कनेक्शन:

- सर स्टैमफोर्ड रैफल्स ने 1819 में सिंगापुर को व्यापारिक स्टेशन के रूप में स्थापित किया था, जिसे कोलकाता से प्रशासित किया जाता था।
- भारत 1965 में सिंगापुर को मान्यता देने वाले पहले देशों में शामिल था।

व्यापार और आर्थिक सहयोग:

- सिंगापुर, **ASEAN में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** है और 2023-24 में यह भारत का **6वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** बन गया।
- **Comprehensive Economic Cooperation Agreement (CECA)** के बाद द्विपक्षीय व्यापार 35.6 अरब अमेरिकी डॉलर (2023-24) तक बढ़ा।

भारत की जन्म दर में गिरावट, कुल प्रजनन दर में पहली बार गिरावट / india's birth rate down, first dip in total fertility rate

संदर्भ:
सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (SRS) की ताज़ा रिपोर्ट 2023 के अनुसार, देश की कुल प्रजनन दर (TFR) घटकर 1.9 पर आ गई है, जबकि 2022 में यह 2.0 थी।

2023 की SRS रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष:

1. **राज्यवार जन्म दर (CBR) और कुल प्रजनन दर (TFR) में अंतर**
   - **क्रूड बर्थ रेट (CBR):** 2022 में 19.1 से घटकर 2023 में 18.4 हो गया, यानी 0.7 अंक की कमी।
     - सबसे अधिक: बिहार (25.8)
     - सबसे कम: तमिलनाडु (12)
   - **कुल प्रजनन दर (TFR):** 2021 और 2022 में 2.0 रहने के बाद 2023 में घटकर 1.9 हो गई।
     - यह दो वर्षों में पहली गिरावट है, जिससे भारत रिप्लेसमेंट लेवल (2.1 बच्चे प्रति महिला) से और नीचे चला गया।
     - सबसे अधिक TFR: बिहार (2.8)
     - सबसे कम TFR: दिल्ली (1.2)
2. **2023 में मृत्यु दर के रुझान:**
   1. **क्रूड डेथ रेट (CDR):** 2022 में 6.8 से घटकर 2023 में 6.4 हो गया।
   2. **शिशु मृत्यु दर (IMR):** 2022 की तुलना में 1 अंक घटकर 2023 में 25 हो गई, और पिछले पांच वर्षों में कुल 7 अंकों की कमी।
      - यानी हर **40 में से 1 शिशु** अपनी पहली सालगिरह से पहले मृत्यु को प्राप्त होता है।

वृद्ध आबादी और जन्म लिंग अनुपात (2023):

1. **वृद्ध आबादी में वृद्धि (60+ वर्ष):**
   - 2023 में वृद्धों का हिस्सा कुल आबादी का **9.7%** हो गया, यानी 0.7 प्रतिशत अंक की बढ़ोतरी, जो धीरे-धीरे **जनसंख्या वृद्धावस्था** की ओर संकेत करता है।
   - सबसे अधिक वृद्ध हिस्सेदारी: केरल (15%)
   - सबसे कम: असम (7.6%), दिल्ली (7.7%), झारखंड (7.6%)
2. **जन्म लिंग अनुपात (SRB):**
   - राष्ट्रीय स्तर पर 2023 में **917 लड़कियाँ प्रति 1,000 लड़कों** पैदा हुईं, जो पिछली अवधि से 3 अंकों की सुधार है।
   - सबसे अधिक SRB: छत्तीसगढ़ (974), केरल (971)
   - सबसे कम SRB: उत्तराखंड (868)
   - हालाँकि, बिहार, दिल्ली, महाराष्ट्र और हरियाणा में SRB 900 से कम बनी हुई है।
   - बिहार का SRB 2020 के 964 से घटकर 2023 में 897 रह गया।

नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) क्या है?
नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) एक विश्वसनीय प्रणाली है जो हर साल भारत में शिशु मृत्यु दर, जन्म दर, मृत्यु दर और अन्य प्रजनन व मृत्यु संबंधी संकेतकों का अनुमान प्रदान करती है, यह एक बड़े पैमाने पर जनसांख्यिकीय सर्वेक्षण है, जिसे हर साल भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भारत के रजिस्ट्रार जनरल के कार्यालय द्वारा आयोजित किया जाता है। SRS के आंकड़े नीति निर्धारण, जनसंख्या प्रबंधन और स्वास्थ्य योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कुल प्रजनन दर (Total Fertility Rate - TFR):
यह एक काल्पनिक माप है जो बताता है कि एक महिला अपने पूरे प्रजनन काल में औसतन कितने बच्चे पैदा कर सकती है। इसकी गणना किसी निश्चित वर्ष में सभी आयु वर्गों की महिलाओं की आयु-विशिष्ट प्रजनन दर के योग से की जाती है।

नमूना पंजीकरण सर्वेक्षण (SRS) 2023 की अहमियत:

विश्वसनीय महत्वपूर्ण सांख्यिकी
- जन्म दर, मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर (IMR), मातृ मृत्यु दर (MMR), और कुल प्रजनन दर (TFR) जैसे संकेतक **जनसंख्या वृद्धि, स्वास्थ्य परिणाम और विकास लक्ष्यों** की निगरानी के लिए आवश्यक हैं।
- उदाहरण: दो वर्षों में TFR में गिरावट **जनसांख्यिकीय संक्रमण** का संकेत देती है, जिसका दीर्घकालीन असर **कार्यबल, वृद्धावस्था और सामाजिक सेवाओं** पर पड़ेगा।

नीति और फंडिंग निर्णय
- SRS डेटा का उपयोग **स्वास्थ्य मंत्रालय, नीति आयोग और राज्य सरकारें** करती हैं ताकि:
  - स्वास्थ्य बजट का आवंटन किया जा सके।
  - मातृ और शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम डिज़ाइन किए जा सकें।
  - **संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs)** की प्रगति की निगरानी की जा सके।

नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी / NIA

संदर्भ:

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि उसने अभी तक विशेष **राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) अदालतें** स्थापित नहीं की हैं। अदालत ने केंद्र को निर्देश दिया कि समयबद्ध सुनवाई सुनिश्चित करने और गंभीर अपराधियों को आसानी से जमानत मिलने से रोकने के लिए बजट आवंटन किया जाए।

नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (NIA):

1. **स्थापना:** NIA एक्ट, 2008 के तहत 26/11 मुंबई हमलों के बाद।
2. **मुख्य कार्य:** भारत की संप्रभुता, सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संधियों को प्रभावित करने वाले अपराधों की जांच करने वाली केंद्रीय आतंकवाद विरोधी कानून प्रवर्तन एजेंसी।
3. **NIA (संशोधन) अधिनियम, 2019:**
   - **क्षेत्राधिकार का विस्तार:** भारत के नागरिकों या हितों से जुड़े अपराधों की जांच विदेश में भी कर सकती है।
   - **मंडेट का विस्तार:** विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, 1908, मानव तस्करी, साइबर आतंकवाद, और शस्त्र अधिनियम, 1959 के तहत अपराध शामिल।
4. **मुख्यालय:** नई दिल्ली
5. **विशेष न्यायालय:** कुल 51 NIA विशेष न्यायालय, जिनमें से दो विशेष रूप से NIA के लिए (रांची और जम्मू)।

मुख्य उद्देश्य और कार्य

- **आतंकवाद का मुकाबला:** इसका मुख्य उद्देश्य भारत में आतंकवादी गतिविधियों का पता लगाना, जांच करना और उन्हें रोकना है.
- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े अन्य गंभीर अपराधों की भी जांच करती है, जैसे कि देश के विरुद्ध युद्ध छेड़ने या परमाणु प्रतिष्ठानों पर अपराध.
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** यह विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों और सम्मेलनों के आतंकवाद-विरोधी प्रस्तावों और समझौतों को लागू करती है.
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** जांच में नए और आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है.
- **मानवाधिकारों की रक्षा:** यह जांच के दौरान मानव अधिकारों और व्यक्तियों की गरिमा की रक्षा के लिए भी काम करती है.

संहिता / SAMHiTA

संदर्भ:

नवीन दिल्ली में आयोजित SAMHiTA (South Asia's Manuscript Traditions & Mathematical Contributions) सम्मेलन का उद्घाटन विदेश मंत्री **डॉ. एस. जयशंकर** ने किया। इस पहल का उद्देश्य दक्षिण एशियाई पांडुलिपि परंपराओं और गणितीय योगदानों को उजागर करना है।

SAMHiTA
South Asian Manuscript Histories and Textual Archive

SAMHiTA (South Asian Manuscript Histories and Textual Archive)

1. **परिचय:**
   - SAMHiTA एक पहल है, जिसका उद्देश्य **भारत और दक्षिण एशिया की पांडुलिपियों** का **रिलेशनल डेटाबेस और डिजिटल आर्काइव** बनाना है।
   - इसमें वो पांडुलिपियाँ शामिल हैं जो **भारत के बाहर लाइब्रेरी, आर्काइव और अन्य संस्थाओं** में संरक्षित हैं।
2. **मुख्य फोकस क्षेत्र:**
   - गणित, खगोलशास्त्र, भाषाविज्ञान, दर्शन, चिकित्सा और साहित्य से संबंधित पांडुलिपियाँ।
3. **महत्व:**
   - भारत की **बौद्धिक परंपराओं** को पुन: स्थापित करना।
   - **सांस्कृतिक विस्मृति** को रोकना।
   - विज्ञान और इतिहास के शोध को **मजबूत करना**।
4. **अन्य पहलें:**
   - **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (NMM), 2003:** पांडुलिपियों का दस्तावेजीकरण, संरक्षण और पहुँच बढ़ाने के लिए।
   - **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA):** पांडुलिपियों और सांस्कृतिक संसाधनों का प्रमुख संग्रहालय और शोध केंद्र।
   - **डिजिटल पहलें:** राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (NDLI), भारतवाणी प्रोजेक्ट, और इंडियन कल्चर पोर्टल।
   - **यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड प्रोग्राम:** वैश्विक स्तर पर दस्तावेजी धरोहर का संरक्षण।

सिल्वर नोटिस / Silver Notice

संदर्भ:

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) ने **INTERPOL** के सहयोग से पहली बार **सिल्वर नोटिस** जारी किया है। यह नोटिस **पवन ठाकुर** के खिलाफ जारी किया गया है, जो नवंबर 2024 में दिल्ली में लगभग **82 किलोग्राम कोकीन** की जब्ती के मामले में वांछित है।

सिल्वर नोटिस (Silver Notice)

1. **नई अलर्ट प्रणाली (New Alert Tool)**
    - Silver Notice, INTERPOL के **Colour-coded Alerts** में नया अतिरिक्त है।
    - इसका उद्देश्य देशों को **अपराध से जुड़ी संपत्तियों (Assets) की खोज और वसूली** में मदद करना है।
2. **उपयोग का क्षेत्र (Scope of Use)**
    - सदस्य देश इसे संपत्तियों, जैसे:
        - प्रॉपर्टी (Properties)
        - वाहन (Vehicles)
        - बैंक अकाउंट (Bank Accounts)
        - व्यवसाय से जुड़ी जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग कर सकते हैं, जो **अपराधी नेटवर्क** से जुड़ी हों।
3. **कानूनी कार्रवाई (Legal Follow-up)**
    - ऐसी संपत्तियों की पहचान और पता लगाने के बाद, **राष्ट्रीय कानून के अनुसार जब्ती या ज़ब्ती** जैसी कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।
4. **पायलट प्रोजेक्ट (Pilot Project):** 52 देशों के साथ शुरू किया गया, जिसमें **भारत भी शामिल** है।
    - इसकी शुरुआत **इटली की मांग** से हुई, ताकि एक वरिष्ठ माफिया सदस्य की संपत्तियों का पता लगाया जा सके।

ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट / Op. Black Forest

संदर्भ:

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सीआरपीएफ, छत्तीसगढ़ पुलिस, डीआरजी और कोबरा जवानों को सफलतापूर्वक संचालित **ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट** के लिए सम्मानित किया।

ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट (Operation Black Forest)

1. **संयुक्त अभियान:** CRPF, विशेष CoBRA यूनिट्स, छत्तीसगढ़ पुलिस और जिला रिजर्व गार्ड (DRG) द्वारा संचालन।
2. **स्थान: कार्रेगुट्टालू हिल (Karreguttalu Hill)**, जो छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर एक प्रमुख नक्सल अड्डा है।
3. **कमांड सेंटर: धलगम फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस**, 2022 में स्थापित, से अभियान का समन्वय।
4. **सामुदायिक जुड़ाव:**
    - स्थानीय लोगों के साथ विश्वास बनाना।
    - कल्याणकारी योजनाओं की आपूर्ति।
    - नक्सल समर्थन नेटवर्क को बाधित करना।
5. **उद्देश्य:**
    - नक्सल मुख्यालय और आधारभूत ढांचे को ध्वस्त करना।
    - भारत के लक्ष्य के अनुरूप **मार्च 2026 तक लेफ्ट विंग एक्सट्रीमिज़्म को समाप्त करना**।

कर्रेगुट्टा हिल्स (Karregutta Hills):

1. **भौगोलिक लाभ:** कठिन और ऊबड़-खाबड़ इलाका, लंबाई में 60 किमी और चौड़ाई में 5-20 किमी, जिसे गुरिल्ला युद्ध के लिए आदर्श माना जाता है।
2. **सीमा पार का कवर:** छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर स्थित होने के कारण सुरक्षा अभियान कठिन, जिससे माओवादी को अतिरिक्त सुरक्षा मिलती थी।
3. **माओवादी अड्डा:** प्रमुख माओवादी संगठनों का कमांड सेंटर।
    - इसमें **पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी बटालियन नंबर 1** का मुख्यालय स्थित, जो सबसे शक्तिशाली माओवादी सैन्य इकाई है।

GS FOUNDATION *For*

UPSC & STATE PSC

- इतिहास
- अर्थव्यवस्था
- भूगोल
- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

1500x4

~~₹6000/-~~

₹4500/-

- रोज़ाना लाइव क्लासेस
- साप्ताहिक टेस्ट
- क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
- लाइव डाउट सेशन
- रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न

COURSE VALIDITY 1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazaar ki
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Baaten Bazar Ki
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

BBK
BaatenBazar ki

EMI AVAILABLE

+ **(FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)**

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR